SEMESTER – IV

EC – 1

Unit – 1

Tribal Movement

- **इकाई की रूप-रेखा :**

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 कोल विद्रोह

1.3 संथाल विद्रोह

1.4 बिरसा मुंडा आंदोलन

1.5 ताना भगत आंदोलन

1.6 झारखंड राज्य का निर्माण

Vetted by :

प्रो॰ (डॉ॰) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9835463960

डॉ॰ राजेश कुमार

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9430934482

1.0 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- जनजातियों तथा उसके श्रेणियों के बारे में आप ज्ञान पाएँगे ।
- जनजाति विद्रोहों के कारणों के बारे में पढ़ेंगे ।
- कोल जनजाति के विद्रोह के कारण एवं परिणाम के बारे में पढ़ेंगे ।
- संथाल विद्रोह की पृष्ठभूमि, कारण, परिणाम का उल्लेख कर सकेंगे ।
- बिरसा के जीवन-काल एवं उनके आंदोलनों को जनांदोलन के रूप में परिवर्तित करने के बारे में जान पाएँगे ।
- ताना भगत आंदोलन के कारण एवं परिणाम को जान सके ।
- झारखंड राज्य के निर्माण की पृष्ठभूमि को रेखांकित कर सकेंगे ।

1.1 प्रस्तावना :

इस पाठ्य-क्रम में औपनिवेशिक शासन की स्थापना के पश्चात् अर्थव्यवस्था, कानून प्रशासन और जीवन के अन्य क्षेत्रों में जो परिवर्तन हुआ, उसका आदिवासी जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा, इसके बारे में पढ़ेंगे । इन परिवर्तनों के परिणाम आदिवासियों के समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीतिक जीवन एवं धार्मिक जीवन पर प्रतिकूल रूप से पड़ा । इसका विरोध समय-समय पर इन आदिवासियों के द्वारा किया गया । इस इकाई में आदिवासी विद्रोहों के उद्‌भव, कारणों, स्वरूप एवं परिणामों की चर्चा की गई । इस इकाई (1.2) सर्वप्रथम 'कोल विद्रोह' की विवेचना की गई है । आगे अन्य आदिवासी विद्रोहों की चर्चा की जाएगी ।

1.2 कोल विद्रोह :

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में आदिवासियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है । इन आदिवासी विद्रोहों में कोल विद्रोह का प्रमुख स्थान है । 1831 ई॰ में शुरू हुए कोल विद्रोह में कोल जनजातियों के अलावा मुंडा, हो, उरांव, भुइंया आदि जनजातियाँ शामिल थी । शोषण के खिलाफ हुए इस विद्रोह को अंततः अंग्रेजों ने अपनी शक्ति और कूटनीति से तो दबा दिया, परंतु अंग्रेजों को भी शोषणविहीन प्रशासन का आश्वासन देना पड़ा और इन क्षेत्रों में कई सुधार कार्य करने पड़े ।

हालांकि कोल विद्रोह के पहले भी वर्तमान झारखंड के विभिन्न क्षेत्रों कई जनजातिय विद्रोह हो चुके थे । इनमें तिलका मांझी का विद्रोह (1783 ई॰), चेरों का आंदोलन (1795-1800 ई॰), तमाड़ विद्रोह (1795-1800 ई॰), मुंडा विद्रोह (1797 ई॰), चुआड़ विद्रोह (1798 ई॰) भूमिज विद्रोह

(1798–1799 ई॰) आदि प्रमुख है । इन आदिवासी विद्रोहों में कोल विद्रोह का प्रमुख स्थान है, क्योंकि इतिहासकारों के अनुसार झारखंड की सांस्कृतिक पहचान का राजनीतिक अर्थ भी पहली बार 1831 के कोल विद्रोह से ही उजागर हुआ था ।

कोल जनजाति के लोग सदियों से पहाड़ी क्षेत्रों में शांतिपूर्वक कबीलाई जीवन बसर कर रहे थे । कालांतर में अपने जीवन को व्यवस्थित करने के लिए उन्होंने फणीमुकुट राय नामक व्यक्ति को अपना राजा मनोनीत किया । इनका सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन बहुत ही सरल था। जंगलों को काटकर उनहोंने वीरान भूमि को रहने लायक एवं खेती करने लायक बनाया और उस पर अपना नैसर्गिक अधिकार माना । स्थानीय स्तर या ग्रामीण स्तर पर धार्मिक एवं धर्मनिरपेक्ष कार्यों का संपादन के लिए उन्होंने पाहन के पदन का सृजन किया । पाहन को धर्मनिरपेक्ष कार्यों में सहयोग के लिए **मानकी या महतो** के पद का सृजन किया । उनकी अपनी सभाथी, जो **परहा** के नाम से जानी गई । इसके द्वारा वे अपने राजनीतिक समस्या का समाधान करते थे । वे प्रकृतिवादी थे और तरह–तरह के देवी–देवताओं की पूजा करते थे ।

मध्यकाल में छोटानागपुर क्षेत्र के उन जनजाति लोगों में उस समय परिवर्तन आना शुरू हुआ, जब इनके राजा ने मुगल शानो–शौकत अपनाना शुरू कर दिया और अपना क्षत्रियकरण कर लिया । इसी समय हिन्दू, सिक्ख एवं मुसलमान व्यापारियों को भी इन क्षेत्रों में बड़ी संख्या में प्रवेश मिला, सि 'दिकू' कहा गया है । इन व्यापारियों ने अपने कीमती वस्तुओं को राज परिवार के लोगों के हाथ बेचना शुरू किया । पैसे के अभाव में राज परिवार के लोगों ने बड़े पैमाने पर जमीन इन व्यापारियों के हाथों बेचना शुरू किया । कालांतर में से व्यापारीगण इस क्षेत्र में बसने लगे और सूदखोर महाजन का भी काम करना शुरू किया । इन परिवर्तनों के कारण जनजातियों का शोषण होना शुरू हुआ, जो अंतत: विद्रोह का कारण बना ।

जब सिंहभूम और उसके आस–पास के इलाकों में अंग्रेजों के प्रवेश और कोल सरदारों के सत्ता के ऊपर अंग्रेजी कानून और व्यवस्था स्थापित करने के प्रयत्न ने इन जनजातियों को उत्तेजित कर दिया। छोटानागपुर का क्षेत्र 1765 ई॰ में अंग्रेजी राज में सम्मिलित हो चुका था, लेकिन इस क्षेत्र पर कई–कई साल तक अंग्रेजों का पूर्ण आधिपत्य नहीं हो सका था । जब लॉर्ड कार्नवालिस (1786–93) ने 1793 ई॰ में स्थायी बंदोबस्त व्यवस्था को लागू किया था, तब इसका प्रतिकूल प्रभाव इन क्षेत्रों पर पड़ा । उन्होंने मानकों या महतो को जमींदान मान लिया और उन्हें राजस्व उगाने का अधिकार दे दिया गया । अर्थात्, जो मानकी कल तक पाहन या सहायक मात्र था अब यह जमींदार बन बैठा । उसने अपने ही लोगों का भरपूर शोषण कर अंग्रेज अधिकारियों को खुश करने की कोशिश की । 'दिकू' लोगों ने भी उनके शोषण में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ा । उन्होंने समय पर राजस्व नहीं जमा करने की स्थिति में जनजातियों की जमीनों को अपने नाम कर लिया और उनके बहू–बेटियों को बेइज्जत किया ।

संयुक्त कमिश्नर विल्किंसन और डेंट ने, जिनकी नियक्ति इस विद्रोह को दबाने के लिए हुई थी, विद्रोह की कारणों को रेखांकित करते हुए निम्न बिंदुओं प्रकाश डाला है :

(i) पिछले कुछ वर्षों के भीतर पूरे नागपुर के कोलों पर वहाँ के इक्तेदारों, जमींदारों और ठेकेदारों ने 35% लगान बढ़ा दिए हैं ।

(ii) परगने भर के सड़कें उन्हें (कोलों को) बिनाकिसी मजदूरी के बेगारी के तहत् बनानी पड़ी ।

(iii) महाजन लोग, उन्हें रुपये या अनाज उधार दिया करते थे । 12 महीने के भीतर ही उनसे 70% और कभी-कभी उससे भी ज्यादा ब्याज वसूल कर लेते थे ।

(iv) कोलों पर प्रति घर के हिसाब से चार आना (25 पैसा) शराब पर कर लगाया गया था, लेकिन वसूली आम तौर पर इसे अधिक की जाती थी और इसके अलावे सलामी के रूप में प्रति गांव एक रुपया और एक बकरी भी ली जाती थी । इससे इन कोलों में सख्त नाराजगी थी ।

(v) हाल ही में वहाँ एक ऐसी डाक प्रणाली चलाई गई थी, जिस पूरा खर्च गांव के कोलों को वहन करना पड़ता था ।

(vi) कोलों के बीच यह भी शिकायत का विषय था कि जो लोग बाहर से आकर इस क्षेत्र में बसे है, इनमें बहुतों ने जिनका कोलों पर काफी कर्ज लद गया है, अपने कर्ज की वसूली के लिए काफी सख्ती की है ।

(vii) बहुत-से कोलों को उनके नाम 'सेवक पहा' लिख देना पड़ा है, अर्थात् उनके हाथ उनकी सेवा में तब तक के लिए बेच देनी पड़ी है, तब तक कर्ज अदा नहीं हो जाय । इसका मतलब था, कि अपने-आपको ऐसे बंधन में डाल देना कि उनकी पूरा कमाई का पूरा हकदार महाजन बन गया और वे जीवन भर महाजन के दास बन गए ।

कोल जनजाति के लोग इस शोषण से मुक्ति के लिए न्यायालय का भी शरण लिया और पुलिस से मिन्नतें भी की, लेकिन न्यायालय एवं पुलिस दोनों ने इन कोलों का साथ न देकर शोषक वर्गों का ही साथ दिया । जिसके कारण इन जनजातीय लोगों में जमींदारों, महाजनों, दिकूओं एवं पुलिस दारोगा के प्रति आक्रोश बढ़ता चला गया ।

इन्हीं आक्रोशों के बीच जब छोटानागपुर के महाराजा के भाई हरनाथ साही के द्वारा कोलों की जमीन को छीनकर अपने प्रिय मुसलमान एवं सिक्ख व्यापारियों के हाथ बेच दिया, तब कोलों में व्याप्त आक्रोश पटल पर आ गया, जो कोल विद्रोह का तात्कालीन कारण बन गया । 1831 में कोल विद्रोह के फूटने की शुरूआती वजहों के बारे में लिखते हुए विल्किंसन ने 12 फरवरी, 1832 की अपनी रिपोर्ट में कहा "राँची जिला में ईचागुट् परगने के सिंगराय मानकी के 12 गाँवों को कुछ बाहरी लोगों के हाथ ठेका दे दिया गया था । उन लोगों ने सिंगराय मानकी को न केवल बेदखल भूमि एवं

कर दिया, बल्कि उसके दो जवान बहनों को बहलाकर उसके साथ बलात्कार भी किया । इसी तरह जफर अली नामक एक दिकू ने **बांद** गाँव के सुगा मुंडा पर अत्याचार किया और उसकी पत्नी की इज्जत भी लूट ली ।

जब इस दु:ख की घड़ी में सिंगराय मानकी ने छोटानागपुर के राजा से मिलकर न्याय की मांग की, लेकिन राजा ने भी कोई साथ नहीं किया । अब इनके पास विद्रोह और न्याय के लिए संघर्ष के अलावा कोई रास्ता नहीं बचा था । अंतत: बंद गाँव, सोनपुर एवं तमार के करीब सात सौ कोलों ने शोषकों के खिलाफ प्रत्यक्ष कार्यवाही शुरू कर दी । इन कोलों ने अपने परंपरागत हथियारों अर्थात् तीर-धनुष से राजा के बिचौलिए एवं दिकूओं पर हमला करना शुरू कर दिया । गाँव के गाँव जला दिए गए । धीरे-धीरे यह विद्रोह कई क्षेत्रों में फैलने लगी । 1832 में जनवरी के मध्य तक मुंडारी एवं उरांव जनजाति के लोग भी पूरे उत्साह से विप्लव में शामिल हो चुके थे ।

विद्रोह की व्यापकता को देखते हुए छोटानागपुर के राजा ने ब्रिटिश सरकार से सहायता मांगी । ब्रिटिश सरकार ने रामगढ़ छावनी से सेना की एक टुकड़ी को तत्काल भेजी । इसके बाद बनारस, बैरकपुर एवं दानापुर से भी फौजी इन क्षेत्रों में भेजी गई । जब कैप्टन विलियमसन के नेतृत्व में ब्रिटिश फौज ने विद्रोह को दबाने का प्रयास किया, तब विद्रोहियों ने ब्रिटिश फौज का डटकर मुकाबला किया, परंतु आधुनिक हथियारों के सामने परंपरागत हथियार कब तक टिक पाते । विद्रोह के प्रमुख नेता **बुद्धो भगत** शहीद हो गया । अन्य कोल नेता सिंगराय, बिंदराय एवं सुर्गा अंत तक लड़ते रहे, लेकिन अंतत: उन्हें भी मार्च, 1832 में आत्मसमर्पण करना पड़ा ।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि कोल विद्रोह को तो अंग्रेजों ने अन्य शोषक वर्ग की सहायता से तो दबा दिया, लेकिन इस विद्रोह ने निश्चित रूप से जनजातीय लोगों को अपने हकों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा प्रदान की । ब्रिटिश सरकार ने भी कुछ सुधार कार्यों पर ध्यान दिया । इस क्षेत्र में शोषणविहीन प्रशासन के लिए 'साउथ बेस्ट फ्रंटियर एजेंसी' की स्थापना की गयी और कैप्टन टी विल्किसन को इस क्षेत्र में गवर्नर जनरल का एजेंट नियुक्त किया गया । इन्होंने कोलों की स्थिति में सुधार लाने के कई उपाय किए और उनके बीच **किसुन साहेब** के नाम से लोकप्रिय हुए ।

1. डा॰ वी॰ वीरोत्तम झारखंड : इतिहास एवं संस्कृति (प्रकाशन-बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी)
2. एस॰ सी॰ दूबे मानव एवं संस्कृति (प्रकाशन : राजकमल)
3. उमेश प्रसाद वर्मा बिहार का जनजातीय जीवन
4. एस॰ वी॰ चौधरी सिविल रिवेलियन इन द इंडियन म्युटनीज
5. के॰ के॰ दत्त हिस्ट्रीय ऑफ द फ्रीडम मूवमेंट इन बिहार, भाग-3